શ્રી શત્રુંજય - મુક્તિ સમ્યગ્જ્ઞાન અભ્યાસક્રમ

સા વિદ્યા યા વિમુક્તયે

C/o. શાહ ગોવિંદજી વીરમ, ફેક્ટરી કમ્પાઉન્ડ, મોંઢા રોડ, ઔરંગાબાદ - ૪૩૧ ૦૦૧

સમ્યગ્જ્ઞાન પ્રવેશિકા

◆◆◆ અભ્યાસક્રમ જવાબ પત્ર ◆◆◆

એનરોલમેન્ટ નંબર हिन्दी

અભ્યાસક્રમ ૨

ગામ ____________

વિદ્યાર્થીનું નામ ____________

પ્રશ્ન-૧ ખાલી જગ્યા

	કપાળ
	ઈન્દ્રિય
	રાગ
	ગંભીર
	કૌશંબી
	ત્રિક
	અજીવ તત્ત્વ
	ઉત્સર્પિણી કાળ
	વ્યસનો
)	અશક
)	ભાવપૂજા
)	પરમાર્થ
)	આતપ
)	વિરમી
)	અર્થાલંબન
)	ધર્મશ્રવણ
)	અસોભ્યતા
)	સાગરોપમ
)	સામાયિક
)	આશાતના

પ્રશ્ન-૨ એક જ શબ્દમાં

(૧)	સ્કંધ
(૨)	બહોબળ
(૩)	સુષમ દુષમ
(૪)	પ્રત્યેક
(૫)	મિશ્ર
(૬)	શ્રી સુપાર્શ્વ પ્રભુ
(૭)	મન શુદ્ધિ
(૮)	આકાર
(૯)	બાદર
(૧૦)	જિતશત્રુ રાજા
(૧૧)	પાપકા ભેદ
(૧૨)	અધર્માસ્તિકાય
(૧૩)	મુક્તાશુક્તિ
(૧૪)	સુકૃત
(૧૫)	કોમળતા
(૫)	આકાશાસ્તિકાય
(૬)	અદૃશ્ય
(૭)	સ્વભાવવાળો
(૮)	અડસઠ
(૯)	સ્કંધ
(૧૦)	ભાષા
(૧૧)	અવકાશ
(૧૨)	મુહૂર્ત મેં
(૧૩)	છોડકર
(૧૪)	સ્પર્શ
(૧૫)	ડાડ
(૧૬)	સ્થિર
(૧૭)	[illegible]
(૧૮)	સૂક્ષ્મ
(૧૯)	દિન
(૨૦)	સૌ

પ્રશ્ન-૩ શબ્દનો અર્થ

(૧)	બીજ
(૨)	પ્રદેશ
(૩)	વર્ણ
(૪)	સાંધા

પ્રશ્ન-૪ જોડકાં જોડો

(૧)	૪	(૬)	૮
(૨)	૭	(૭)	૩
(૩)	૯	(૮)	૧૦
(૪)	૫	(૯)	૧
(૫)	૨	(૧૦)	૬

પ્રશ્ન-૫ સંખ્યામાં જવાબ

(૧)	૬
(૨)	૯
(૩)	૩૭૭૩
(૪)	૩૨
(૫)	૧૦
(૬)	૮
(૭)	૩૫૦
(૮)	૨૫૬
(૯)	૧૪
(૧૦)	૬૩

	પ્રશ્ન-૬ ✓ કે ×		પ્રશ્ન-૭ આ વાક્ય ક્યા પાને છે તે નંબર
(૧)	×	(૧)	૬
(૨)	×	(૨)	૧૯
(૩)	×	(૩)	૮
(૪)	✓	(૪)	૧૩
(૫)	×	(૫)	૯
(૬)	✓	(૬)	૧૮
(૭)	×	(૭)	૧૫
(૮)	✓	(૮)	૫
(૯)	~~×~~	(૯)	૧૦
(૧૦)	✓	(૧૦)	૨૧

...મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૨-મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૩-મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૪-મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૫-મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૬-મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૭-મેળવેલ ગુણ	પ્રશ્ન ૮-મેળવેલ ગુણ	કુલ ગુણ
+	+	+	+	+	+	+	=	

...માર્ક ____________ તપાસનારની સહી ____________

... इक्कीस हजार वर्ष प्रमाण होता है। इस आरे के मनुष्य का उत्कृष्ट आयुष्य बीस वर्ष का तथा शरीर एक हाथ का होता है।

इस आरे के मनुष्य अत्यंत ताप और शीत सहन न कर सकने के कारण वैताढ्य पर्वत की दक्षिण, और उत्तर की तरफ रहे गंगा सिंधु की गुफाओं में रहेंगे।

मत्स्यादि का भोजन करने वाले, महाक्रोधी, निर्लज्ज, मर्यादाहीन और मरकर नरक आदि दुर्गति में जाने वाले होंगे।

छः वर्ष की स्त्रियाँ गर्भ धारण करेंगी।

पुद्गल के लक्षण

वर्ण :— श्वेत - लाल - पीला - नीला और काला ये पाँच मूल वर्ण हैं। भेद प्रभेद बहुत हैं। एक परमाणु में एक वर्ण है। वर्ण के बिना परमाणु नहीं है। इससे यह उसका लक्षण है।

गंध :— सुगंध - दुर्गंध दो प्रकार की गंध प्रसिद्ध है। गंध बिना परमाणु नहीं है। इससे यह पुद्गल का गुण - लक्षण है।

रस :— तीखा - कड़वा - तुरा, खट्टा, मीठा ये पाँच मूल रस हैं। रस बिना पुद्गल नहीं, इससे यह लक्षण है।

श्री सुमतिनाथ प्रभु विनिता पुरी के राजा मेघ और रानी मंगला के उदर में श्रावण सुदी बीज को आये। चौदह स्वप्न सूचित प्रभु का जन्म वैशाख सुदी आठम को हुआ। लंछन - क्रौंच, वर्ण - सुवर्ण, ऊँचाई तीनसौ धनुष थी। दस लाख पूर्व कुमार अवस्था, उन्तीस लाख पूर्व और बारह पूर्वांग राज्य अवस्था। सांवत्सरिक दान देकर वैशाख सुदी नवमी को एक हजार राजाओं के साथ दीक्षा ली। बीस वर्ष छद्मस्थ रहे। विनितापुरी में चैत्र सुदी ग्यारस को केवलज्ञान प्राप्त हुआ। इस तरह चालीस लाख पूर्व पूर्ण आयुष्य भोगा। एक हजार मुनिओं के साथ मासिक अनशन कर सम्मेतशिखर पर मोक्ष सिधारे। प्रभु के चमर आदि एक सौ गणधर, तीन लाख बीस हजार साधु, पाँच लाख तीस हजार साध्वीयाँ, दो लाख इक्यासी हजार श्रावक और पाँच लाख सोलह हजार श्राविकाएं परिवार था। शासन रक्षक तुंबरु यक्ष और महाकाली यक्षिणी थे।

पाँच प्रकार के अभिगम

जिनमंदिर में प्रवेश करते समय स्वयं को उपयोग में आने वाली चार वस्तुओं का त्याग करना; 1) छत्र 2) चंवर 3) मुकुट 4) पुष्पों की माला आदि सचित्त पदार्थ 5) पाँचवाँ एक साड़ी उत्तरासंग यानि दोनों तरफ खुली किनारवाला, अखंड तथा एक पनेवाला, जिसका एक छोर दाहिनी भुजा के नीचे से निकालकर बायें कंधे पर से पीठ के भाग पर जाने देना तथा बायें कंधे पर से उत्तरासंग का एक छोर आगे की ओर लटकाकर रखना। आगे के छोर को अपने दोनों हाथों में रखकर जिनमंदिर में प्रवेश करते ही प्रभुजी को दूर से देखते ही, उस छोर सहित हाथ जोड़कर प्रणाम करना, फिर मुँह के आगे छोर रखकर 'नमो जिणाणं' कहना।

जब तक हृदय में कोमलता नहीं है, तब तक दया का गुण दिखाई नहीं देता। दया गुण को विकसित करने के लिये अन्य जीवों के दुःख दूर करने के प्रयास करने पड़ेंगे। सद्भावना का चिंतन करना पड़ेगा। दया धर्म का मूल है। धर्म जीव को स्वार्थ से परमार्थ की ओर ले जाता है। दयालु आत्मा ए खुद दुःख सहन करके भी औरों को सुखी करते हैं। भूख - प्यास और दुःखों से त्रस्त जीवों की योग्य सहायता कर उनके दुःखों का हरण कर सुखी बनाने का प्रयत्न कर आत्मकल्याण की साधना करे।